विचारसेतु

आत्मनिरीक्षण का पथ

जून, 2014 वर्ष – 7 अंक – 04

सच्चा आंतरिक परित्याग मन को अवांछनीय तनाव, चिन्ता एवं उत्तेजनाओं सभी से मुक्त करता है। यह पारदर्शकता और संतुलन लाता है। यदि एक साधक का मन ऐसी उन्मुक्त उत्कृष्टता से अनुगृहीत नहीं होता है, तब उसे अंतर तक खोज करनी चाहिए और पहचानना चाहिए कि मूलभूत में क्या गलती या आत्म-छलना है। साधना में उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए कमियों या अज्ञानता को ठीक करने का प्रयास अनिवार्य है। ***– स्वामीजी***

विषय सूची

जयंती संदेश **2**
अपनी सांस्कृतिक संरचना को सशक्त करना

भगवद्गीता में सारभूत धारणाएँ–120 **8**
भगवद्गीता की शाश्वत प्रासंगिकता

गुरुभक्ति से धन्यता – माँ गुरुप्रिया **17**

आत्मनिरीक्षण के लिये श्लोक–39 **21**
भक्ति के बिना जीवन – मात्र एक भार – माँ गुरुप्रिया

पत्राचार **24**
सांसारिक जीवन का परिशोधन

आप कहाँ है ? (एक कविता) – आशा शिवशंकरन् **27**

नित्यता में विलय **28**
मदनलाल चढ्ढा (दिल्ली)

समाचार एवं टिप्पणियाँ **29**

प्रकाशक एवं मुद्रक स्वामी भूमानन्द तीर्थ द्वारा ब्रह्मविद्या सेन्टर, 2/3 बसेरा अपार्टमेन्ट, सोनारी, जमशेदपुर, झारखण्ड-831011 से प्रकाशित एवं स्टील सिटी प्रेस लिमिटेड, विष्टुपुर, जमशेदपुर, झारखण्ड-831001 द्वारा मुद्रित।
संपादक : स्वामी भूमानन्द तीर्थ

अपनी सांस्कृतिक संरचना को सशक्त करना

(पूज्य स्वामीजी के द्वारा विभिन्न केन्द्रों को भेजे गये जयंती संदेश का सारांश)

मदीय हृदयाकाशे चिदानन्दमयो गुरुः ।
उदेतु सततं सम्यक् अज्ञानतिमिरारुणः ।।

ब्रह्म-विद्या का महत्त्व

हरिः ओम् तत्सत् जय गुरु। मैं इस धरती पर अपने शरीर का 81 वर्ष पूरा कर रहा हूँ। मेरा, ब्रह्म-विद्या प्रसार के लिए समर्पित तापसिक जीवन का, साठ वर्ष पूरा होने में केवल एक वर्ष कम है। 23 वर्ष की अवस्था में सन्न्यास लेने के बाद मेरा जीवन पूर्ण रूप से सार्वजनिक रहा है : संपूर्ण समाज मेरा परिवार बन गया। मेरे जीवन का एकमात्र अभियान रहा है, ब्रह्म-विद्या - इसकी साधना और इसका सघन प्रसार ।

एक सन्न्यासी के पास कुछ भी नहीं होता है। इसलिए यह शरीर भी मेरा नहीं है। यह तो उनके द्वारा ही संरक्षित और समर्थित है जो मुझे और आश्रम को प्यार करते हैं, जो आश्रम और इसकी गतिविधियों को चलाते रहे हैं।

सन्न्यास का दोहरा लक्ष्य होता है - पर्याप्त आध्यात्मिक ज्ञान, ब्रह्म-विद्या, प्राप्त करना जिससे साधक का जीवन सफल हो जाए और फिर दूसरों के कल्याण के लिए काम करना - आत्मनो मोक्षार्थम् जगद्-हिताय च। एक सन्न्यासी पूर्णतः ज्ञान के लिए ही समर्पित होता है। उसे इससे अधिक श्रेष्ठ और कुछ भी नहीं लगता है। उसके लिए तो ज्ञान ही सर्वोपरी है। यह उसके लिए कोई नीरस बौद्धिक साधना नहीं है बल्कि यह उसके हृदय को संपन्न, धनी और पूर्ण बनाने के साधन है जिसके लिए उसका हृदय तड़पता है। इसी अर्थ में सन्न्यास सर्वोत्तम और विजेता है।

चलता फिरता विश्वविद्यालय के रूप में मैं पिछले छः दशकों से आपलोगों में से बहुतों के संपर्क में रहा हूँ। मैं आप सब को याद करता हूँ। मैं आपको प्यार करता हूँ। एक तरह से मैं आपका आभारी भी हूँ। आपलोग उन सभी

कार्य-कलापों में भाग लेते रहें हैं जिसे मैं या आश्रम करते आ रहे हैं। आपलोग जो भी करते हैं उसका मूल्य या इनाम अमूल्य है।

आपका अपना परिवार है। अपने बच्चों की देखभाल करना आपका कर्तव्य है। आप इसे करने को बाध्य हैं। आप अपने परिवार या बच्चों के कृतज्ञ होते हैं। लेकिन हमारे संग में रहने के लिए ऐसी कोई बात नहीं है। आप मेरे या आश्रम के संपर्क में जो करते हैं वह आपका ही चुनाव है। मेरी या आश्रम की सेवा करने के लिए कोई बाध्यता नहीं है।

जब आप इस विकल्प को चुनते हैं तो यह बहुत ही लाभकारी हो जाता है। मैं चाहूंगा कि आप इस मूल सत्य और अन्तर को समझें। एक सामाजिक आयाम को अपनाना और उत्साह से करना बड़े भाग्य और आशीर्वाद की बात है। इससे आपके अन्दर एक विस्तार, उन्नति और समृद्धता का भाव आएगा, जो आप नहीं पा सकते हैं यदि आप केवल घर की सीमा में रहेंगे।

ज्ञान यज्ञ को अधिक प्रभावकारी बनाना

बहुत शीघ्र ही नूतन स्वामीजी (स्वामी निर्विशेषानन्द तीर्थ) अमेरिका के लिए प्रस्थान करेंगे। उत्तरी अमेरिका का आत्मीय वैभव विकास केन्द्र कई कार्यक्रमों की शृंखला आयोजित करने जा रही है। मैंने पंकज से पूछा - "क्या नूतन स्वामीजी का जाना जरूरी है? क्या आपलोग साल में दो बार हमलोगों का कार्यक्रम आयोजित कर पायेंगे? जब वह वहाँ जायेंगे तो उनके प्रवास का अच्छा लाभ लेना चाहिए। यद्यपि जब भी आपलोग चाहेंगे हमलोग आ सकते हैं। लेकिन हमारी यात्राओं का अधिक से अधिक लाभ लेने के लिए आपलोगों को इसका प्रचार करना होगा, आपको मिल कर काम करना होगा।"

"इसके लिए शारीरिक और मानसिक रूप से भाग लेने की आवश्यकता है। इसके लिए आर्थिक साधन चाहिए। नूतन स्वामीजी वहाँ आश्रम के प्रतिनिधि के रूप में जा रहे हैं - ब्रह्म-विद्या का प्रचार करने। ब्रह्म-विद्या को धार्मिक सीमा से बांध कर नहीं रखना चाहिए। हमें चाहिए कि अधिक से अधिक लोगों को इसमें सम्मिलित और उत्साहित करें। आप सभी को इसे

गंभीरता से सोचना चाहिए कि उनके इस प्रवास को लोगों के लिए कैसे प्रासंगिक बनाया जाये।''

यह हमारे सभी केन्द्रों पर होने वाले ज्ञान यज्ञों के लिए भी सत्य है। हमलोग आते हैं और कार्यक्रम आयोजित करते हैं। आप में से जो लोग इसे संभव बनाते हैं वे इस अभियान में बराबर के प्रतिभागी हैं। एक आदमी ही सबकुछ नहीं कर सकता। लेकिन कुछ लोग मिल कर बड़ा काम कर सकते हैं। हमलोग बोलते हैं और प्रसार करते हैं और आप सब लोग इसकी सुविधा बनाते हैं।

आप लोगों को हमारी संगति से क्या लाभ हुआ, आप इसे दूसरों को बताएँ। उनलोगों के लिए यह एक प्रकाश प्रकट होने जैसा हो जिससे उन्हें इस साधना में रुचि बने। एक तरह से यह आपलोगों के लिए एक चुनौति है। यदि कुछ आपके लिए अच्छा होता है तो आपको चाहिए कि यह आपके दूसरे मित्रों और शुभ-चिंतकों के लिए भी लाभकारी हो। मैं चाहूंगा कि आप में से सभी इसमें कुशल बनें। आपने जो पाया है उसके बारे में लोगों से प्यार से बोलिए। अपने दैनिक जीवन में इसे दिखाएँ। दुनिया को ऐसी आध्यात्मिक वातावरण की आवश्यकता है। तभी जीवन और भी बेहतर और संपन्न होगा।

जब भी ज्ञान यज्ञ होता है उसके अधिक से अधिक लोग भाग लें जिससे हमारी समाजिकता सशक्त बने। हमलोग इतनी दूर से आपके पास आते हैं क्योंकि हम एक वैश्विक संबंध महसूस करते हैं। आप सब को इस पर विचार करना चाहिए।

हमारे मूल्य - धार्मिक सीमा के पार

जन्म से मैं हिन्दु समाज का हूँ। चूंकि मेरा लालन-पालन हिन्दु वातावरण में हुआ है और मुझे अपने धर्म-ग्रंथ और महाकाव्य पढ़ने का अवसर मिला - इसी कारण से मैं जो हूँ, वह हूँ। यदि मेरा जन्म दूसरे समाज में हुआ होता तो मैं इतना खुले विचार का, स्वतंत्र और व्यापक नहीं होता, जितना मैं अभी हूँ। जन्म और पालन पोषण का बहुत बड़ा हाथ होता है किसी

व्यक्ति का चरित्र और व्यवहार बनाने में।

हिन्दु धर्म अपनी विशालता और ऊँचाई के लिए जाना जाता है। यह हर स्तर पर व्यापक है। इसमें संकीर्णता का कोई स्थान नहीं है। वसुधैव कुटुम्बकम - पूरा विश्व ही अपना परिवार है - यही हमारा लक्ष्य है। मातृभूमि के लिए हमारा भाव भी निर्विवाद रूप से स्पष्ट है - जननि जन्म-भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि - माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी महान है।

ये जो मूल्य हिन्दु धर्म सिखाते हैं बहुत ही अद्‌भुत हैं। हमें इसका मूल्यांकन अच्छी तरह से करना चाहिए। हमें अपने पूर्वजों का आभारी होना चाहिए जिन लोगों ने इतने उत्तम गुणों की अवधारणा की और अपने में समाहित किया। इसलिए अपने समाज को सशक्त करने के लिए जो भी आवश्यक हो हमलोगों में से सभी के द्वारा किया जाना चाहिए। यह हम सभी के लिए जन्मजात सामाजिक कर्तव्य है।

किसी भी समय में हम हावी होने का भाव नहीं रखते हैं। हमलोग सदा ही लोगों को मानसिक रूप से गले लगाने के लिए तैयार रहते हैं। लेकिन कभी भी आरोपण, वर्चस्व या परिवर्तन के लिए नहीं। इस अर्थ में मुझे हिन्दु समाज यानि कि हिन्दुस्तान में रहने वाले सभी से बहुत प्यार है, चाहे उनका जो भी धर्म या जाति हो। मैं चाहूंगा कि इसके सदस्य योग्यता, मूल्य और उत्कृष्टता में अधिक शक्तिशाली बनें। यह तभी संभव होगा जब उनके अन्दर एक दृढ़ सांस्कृतिक समरसता होगा। इसके लिए जो भी आवश्यक होगा मैं करने को तैयार हूँ। भारत की संस्कृति ऐसी नहीं है कि किसी धार्मिक विघटन या भेद से यह संकुचित हो या टूट जाए।

हमारी संस्कृति धर्म से ऊपर है। भारत में अनेक धर्म हैं। लेकिन सांस्कृतिक रूप से ये सभी एक हैं। हमारी एक सांस्कृतिक एवं जातीय पहचान है जो पवित्र, पोषक और संपूर्ण है। हमारे मूल्य आवश्यक रूप से भगवान या धर्म से जुड़े हुए नहीं हैं। धर्म तो आते जाते रहेंगे। कई धर्म पैदा हुए और उनमें से कई चले गए। वर्तमान धर्म भी समय के साथ नष्ट हो जाएंगे। लेकिन मौलिक मूल्य शाश्वत रहेंगे।

मैं हमेशा ही वैदिक उपनिषदों में बताए गए सांस्कृतिक मूल्यों के बारे में बोलता हूँ। हमारे मूल्य सही मायने में मानव मन और बुद्धि से संबंधित हैं। इनसे किसी में भी तत्कालिक भावनात्मक प्रेरणा और तार्किक बाध्यता पैदा होती है।

ध्यान दीजिये : मन के द्वारा प्रेरणा और बुद्धि के द्वारा बाध्यता!

मूल्य ह्रास को रोकना

ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ प्रसिद्ध सभ्यताएँ मूल्यों में ह्रास के कारण नष्ट हो गई। समाज केवल आर्थिक भूखमरी से ही नष्ट नहीं होता है। मूल्य ह्रास भी विनाश लाते हैं। इस अवनति को रोकना चाहिए और मूल्यों को स्थापित किया जाना चाहिए। आरंभ में यह एक व्यक्तिगत प्रयास हो सकता है लेकिन जब कई लोग भाग लेते हैं तो यह सामूहिक अभियान बन जाता है। आप सब को इससे प्रेरित होना चाहिए। हमारे समाज पर मँडराते खतरे या विपत्ति का मूक दर्शक बन कर हम नहीं रह सकते। हमें इसके परिणाम से बचने के लिए, इसका उपचार करने के लिए जागरूक होना चाहिए।

मैं चाहूंगा कि आप इस पहलु को समझें और इस पूरे अभियान में प्रतिभागी बनें। आप सभी को इस सांस्कृतिक बंधन को महसूस करना चाहिए और इसे जितना संभव हो बढ़ाना चाहिए।

हम राष्ट्र के नागरिक हैं। हमें केवल परिवार, समाज या धर्म तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। आपको इस विचार को अपने अन्दर बनाए रखना चाहिए ताकि आप जो भी अच्छा हो, कर सकें। इसके द्वारा आप सब को अत्यंत धन्यता प्राप्त होगी और लाभ होगा। समझें कि यह काम मूल रूप से आध्यात्मिक है जिससे दूसरे सौभाग्य मिलते हैं, जैसे समृद्धि, शिक्षा और हर प्रकार से कल्याण।

ज्ञानियों के संग का लाभ

इसी संदर्भ में मैं एवं मेरे शिष्य विश्व के विभिन्न भागों में यात्रा करते रहते हैं। आधुनिक तकनीकी साधनों के द्वारा हमें अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचना चाहिए। हमलोग यह सब क्यों कर रहे हैं ? यह सिर्फ़ अपनी संस्कृति से प्यार के कारण और जिस समाज में हम रहते हैं एवं पूरे मानव समाज से संबंध के कारण।

इसलिए हमने जो अलग अलग केन्द्र बनाए हैं उसमें सक्रिय हो जाएँ।

हमलोग दिल्ली साल में दो बार जाते हैं। हमलोगों ने निश्चय किया है कि जमशेदपुर भी दो बार जाएंगे। जब हम वहाँ होते हैं तो आप लोग केन्द्र में आते हैं, हमलोगों को सुनते हैं और हमारी संगति में रहते हैं। लेकिन जब हम चले जाते हैं तो आप सभी को स्वयं ही संग बनाना होगा। आपको नियमित रूप से केन्द्र में जाना चाहिए, सत्संग करनी चाहिए और इसकी देखभाल अच्छी तरह करनी चाहिए। वहाँ जाईए और केवल बैठिये – कम से कम आधा घण्टा या एक घण्टा। यह भौतिक संबंध बहुत महत्त्वपूर्ण है। इससे आपका आध्यात्मिक लगाव और समर्पण बढ़ेगा। प्रेम और वचनबद्धता मूल आध्यात्मिक मूल्य हैं।

मलेशिया में हमारे भक्त बहुत ही सक्रिय हैं; सप्ताह में दो या तीन दिन विभिन्न विषयों पर साप्ताहिक कार्यक्रम करते हैं। लोग इसमें भाग लेते हैं, आध्यात्मिक उत्साह से। लेकिन मैं सोचता हूँ कि दूसरे केन्द्रों में भी अधिक लोगों को भाग लेने के लिए आगे आना होगा। इसके लिए आपको विशेष रूप से प्रयास करना होगा।

आध्यात्मिक संग दो तरह से हो सकता है – या तो आपके गुरु के साथ हों या दूसरे आध्यात्मिक सहयात्री गुरु-भाईयों के साथ, ब्रह्मविद्या पर विवेचन करते हुए। साथ ही धर्म-ग्रंथों को पढ़ने की आदत भी डालें। भगवद्गीता और दूसरे शास्त्रों को पढ़ें। संतों की जीवनियाँ पढ़ें – चमत्कार और रहस्य को गौरवांवित करने वाली जीवनियों को छोड़ कर।

समझें कि केन्द्र आपका केन्द्र है। यह स्वामीजी का या आश्रम का केन्द्र नहीं है। सभी में केन्द्र को अपना समझने का भाव बढ़ना चाहिए। एक साथ आपको इसे 'हमलोगों का केन्द्र' समझना चाहिए।

मैं प्रत्युत्तर चाहता हूँ

मैं जो कह रहा हूँ आप सब पर लागू है। मैं अपेक्षा करता हूँ के आप सभी मुझे अपना प्रत्युत्तर लिखेंगे।

मैं आप सब को मानसिक रूप से गले लगाता हूँ और आशिष देता हूँ। अच्छा स्वास्थ्य, आंतरिक स्वस्थता और उन्नत भाव रखें! आपके परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी अच्छे बच्चे हों। उन सभी में परिवार और समाज के लिए प्यार हो। उनमें ईश्वर के प्रति विश्वास हो। देश में उनका योगदान हो और समाज को उनपे गर्व हो।

हरिः ओम् तत् सत् !

भगवद्गीता की शाश्वत प्रासंगिकता

अंग्रेजी विचारसेतु के जुलाई 2008 अंक से अनुवादित

भगवद्गीता महान महाकाव्य महाभारत का एक भाग है। महाभारत व्यासदेव मुनि की आत्म कथा है। यह महाकाव्य दुर्योधन के नेतृत्व में कुरुवंश के अधःपतन की चर्चा करता है। कौरवों एवं पाण्डवों की शिक्षा एवं देखभाल उनके पितामह महान भीष्म के द्वारा की गई। अंधे राजा धृतराष्ट्र के 100 पुत्र थे जिनमें दुर्योधन सबसे बड़ा था और पाण्डु के पुत्र पाण्डव कहलाते थे। पाण्डव पाँच भाई थे और उनके पिता की मृत्यु उनके युवा होने से पहले ही गई थी। कौरव जानबूझकर लोभ, घृणा एवं दुष्टता में लिप्त रहते थे। दूसरी ओर, पाण्डव सद्गुणों एवं सज्जनता के प्रेमी थे। उनका अन्तर इतना गहरा हो गया कि इसने उन्हें अपना रास्ता हमेशा के लिये अलग करने पर विवश कर दिया।

कौरव हस्तिनापुर में रहते थे और पाण्डवों को अपनी राजधानी इन्द्रप्रस्थ में स्थापित करनी पड़ी। दुर्योधन के नेतृत्व में हस्तिनापुर परिवार इन्द्रप्रस्थ को हासिल किए बिना अभी भी संतुष्ट नहीं हो सका था। इस क्रूर महत्वाकांक्षा ने गुप्त एवं प्रकट अनेक आघात किये। यद्यपि पाण्डवों ने उन सब को तापसी रूप से सहा और वे जीवित रहे, उन्हें 12 वर्षों तक जंगल में रहना पड़ा और इसके तुरंत बाद एक वर्ष अज्ञातवास करना पड़ा। उनलोगों ने न्यायपूर्वक अपना राज्य वापस मांगा या शान्तिपूर्वक रहने के लिये कम से कम एक गाँव मांगा। दुर्योधन के घृणायुक्त मन ने कठोरतापूर्वक सूई की नोक के बराबर भी जमीन अपने भाइयों को देने से अस्वीकार कर दिया।

यह निर्णायक कुरुक्षेत्र युद्ध में परिणत हो गया जिसने सम्पूर्ण उपमहाद्वीप को समेट लिया। सब मिलाकर लगभग 45 लाख योद्धा शामिल हुये। इस भूभाग के करीब-करीब सभी राजाओं ने अपनी सेना को दुर्योधन या युधिष्ठिर की सेना में शामिल होने के लिये भेजा था। यह ध्यान देने योग्य है कि धार्मिकता की रक्षा करने वाले की संख्या अधार्मिकता के पक्षधरों की तुलना में करीब आधी थी।

यह उस समय के समाज एवं इसके धार्मिक स्तर की एक तस्वीर हमें देती है। यह प्रमाणित भी करता है कि मानवता हमेशा अच्छे-बुरे, सज्जन एवं दुर्जनों का मिश्रण रही है जिसमें पापियों के तरफ थोड़ा अधिक झुकाव प्रतीत होता है जैसा आधुनिक युग में है।

व्यासदेव सम्पूर्ण कहानी के विषय का वर्णन असत्य के विरूद्ध सत्य, अधर्म के विरुद्ध धर्म की व्याख्या के रूप में करते हैं जिससे यह कथा सभी कालों के लिये प्रासंगिक हो जाती है। इस तरह का वर्णन स्वाभाविक रूप से महाकाव्य का आयाम ग्रहण कर लेता है। इसका प्रधान उद्देश्य मानव जीवन के शाश्वत मूल्यों को प्रस्तुत करना है और यह बताते है कि किस प्रकार ये मूल्य अपने समर्थकों को उनके नियत लक्ष्य एवं परिपूर्णता की ओर ले जाते हैं।

यह युद्ध संवाद एक ग्रंथ है जो मन एवं इसकी समस्यायें तथा बुद्धि एवं इसकी खोजों का वर्णन करता है।

सभी नैतिक पहेलियों में, जिनका सामना मन करता है, कुरुक्षेत्र का दृश्य सबसे अधिक परीक्षा लेने वाला एवं व्यथित करने वाला है। यह स्पष्ट रूप से प्रकट करता है कि किस प्रकार प्रत्येक चीज का समाधान हमारे अपने ही मन एवं बुद्धि में रहता है। इस तरह यह युद्ध संवाद गंभीर नैतिक ग्रंथ के साथ-साथ सबसे अधिक आधिकारिक (authoritative), आध्यात्मिक एवं दार्शनिक दस्तावेज है जो **मन एवं इसकी समस्यायें तथा बुद्धि एवं इसकी खोजों का वर्णन करता है** और दोनों के अन्तिम निष्कर्ष (हल) की जानकारी देता है। इसके साथ ही यह सामाजिक जीवन के नैतिक एवं धार्मिक पहलुओं पर पर्याप्त प्रकाश डालता है।

भगवद्गीता को प्रारंभ करने वाली तात्कालिक घटना कुरूक्षेत्र में युद्ध के प्रथम दिन हुई थी। और संजय ने जन्मांध धृतराष्ट्र को इसे दसवें दिन कहा। तबसे घटनाओं को गुजरे हजारों वर्ष बीत चुके हैं। हमारे सामने उन घटनाओं का विवरण महान मुनि व्यासदेव द्वारा दिया गया है। **इसे महाकाव्य का आयाम देकर मुनि ने सम्पूर्ण घटना को अमर बना दिया है।** तब से ऐसे चित्रण की आन्तरिक क्षमता के कारण यह हमारे समाज के ताना बाना के रूप में रहा है।

शाश्वत रूप से प्रासंगिक इस विशिष्ट ग्रंथ पर लगता है कि बहुत दिनों तक

ग्रहण लगा रहा। महान शंकर ने अपने गुरु गोविन्द पाद के आदेश से नर्मदा नदी के किनारे रहते हुये वेदान्तिक संदेश एवं अभ्यास की पुर्नस्थापना करने के कठिन कार्य को अपने हाथों में लिया। ऐसा करके उन्होंने वह आवश्यक श्रद्धा, आदर एवं समर्पण इस कार्य को दिया जिसके वे अधिकारी थे।

एक विद्या केन्द्र से दूसरे विद्या केन्द्र पर जाकर शंकर ने उस समय के विशिष्ट पंडितों का सामना किया जो मानव जीवन पर, इसके नियत लक्ष्य एवं इसे उपलब्ध करने के उपाय पर विरोधी विचार रखते थे। पंडितों से मिलकर, उनसे सौहार्दपूर्ण वातावरण में शास्त्रार्थ कर **शंकर ने औपनिषदिक ज्ञान और सब के लिये यह जो प्रत्यक्ष एवं चरम संदेश रखता था, उसकी सर्वोच्चता को सिद्ध किया।** यह काम आसान नहीं था किन्तु उन्होंने इस कार्य को गरिमामय महत्ता एवं भव्यता के साथ पूरा किया।

भगवद्गीता ने अनेक लोगों के मन, बुद्धि एवं हृदय को प्रेरणा, मार्गदर्शन, समाधान एवं आश्वासन देना प्रारंभ कर दिया।

यही वह समय था जब शंकर ने अपने प्रचार के मिशन के एक भाग के रूप में भगवद्गीता के साथ-साथ दस उपनिषदों एवं ब्रह्मसूत्रों पर अपनी टिप्पणी लिखी। ये एक साथ मिलकर प्रस्थानत्रयी का निर्माण करते हैं जो भारतीय आध्यात्मिक दर्शन एवं अभ्यास के तीन मौलिक ग्रंथ हैं। इसने भगवद्गीता की महत्ता एवं प्रासंगिकता को प्रकाश में लाया। राष्ट्रीय परिदृश्य अचानक ही बदल गये और भगवद्गीता ने अनेक लोगों के मन, बुद्धि एवं हृदय को प्रेरणा, मार्गदर्शन, समाधान एवं आश्वासन देना प्रारंभ कर दिया। तब से तपस्वी विद्वानों ने अपने आध्यात्मिक जीवन एवं ज्ञान तथा परिपूर्णता की साधना में एक अनिवार्य अंग के रूप में इस ग्रंथ का आश्रय लिया है।

भगवद्गीता अब एक अज्ञात ग्रंथ नहीं है। यह जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों द्वारा विस्तृत रूप से प्रचलित, पढ़ा गया, अभ्यास किया गया एवं प्रचारित किया गया है। **भगवद्गीता के श्रोताओं की संख्या पहले की अपेक्षा आज बहुत अधिक है।**

मैंने भगवद्गीता में इन सारभूत धारणाओं पर लिखने का काम अपने तपस्वी जीवन के एक भाग के रूप में लिया है। आध्यात्मिक प्रचार का कार्य मैं गत 50

वर्षों से अधिक समय से कर रहा हूँ। आश्रम से प्रकाशित मासिक पत्रिका विचारसेतु इस प्रस्तुति के पीछे एक आवश्यकता के रूप में कार्य करती आ रही है। यह श्रृंखला 12 वर्षों तक चला जिसका प्रथम अंक जून 1996 में प्रकाशित हुआ था।

एक व्यक्तिगत संवाद शाश्वत मूल्य एवं प्रासंगिकता की एक जीवन-गाथा हो गई।

अर्जुन-कृष्ण का संवाद अप्रत्याशित रूप से युद्ध प्रारंभ होने से ठीक पहले हुआ था। इस संवाद के समापन के बाद संजय पूरी घटना के बारे में अपना ही अवलोकन बताते हैं। अंत में अर्जुन ने भी कृष्ण से जो कथा सुनी थी उसके मूल्य एवं उपयोगिता के बारे में अपनी प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति की। संजय का वक्तव्य ऐसे एक व्यक्ति का है जो दृश्य स्थल पर था और सम्पूर्ण घटना को देख रहा था। यह स्पष्ट रूप से हमें कहता है कि **कृष्ण की व्याख्या सिर्फ अर्जुन के लिये प्रासंगिक नहीं थी,** जिन्हें यह सम्बोधित की गई थी, **बल्कि संसार में अन्य सब के लिये भी थी।** एक व्यक्तिगत संवाद शाश्वत मूल्य एवं प्रासंगिकता की एक जीवन-गाथा हो गई।

व्यक्तिगत इतिहास का प्रभाव मानवीय जीवन में प्रबल है। वर्तमान घटनायें केवल उन्हीं का क्रियान्वयन हो सकती हैं जो कुछ पहले ही संसार में हो चुका है। जैसी प्रकृति एवं इसके अवयव हैं वैसी ही घटनायें उनके क्षेत्र में होतीं हैं। शायद ही कुछ नयी हो सकती है। इतिहास स्वयं दुहराता है। प्रश्न केवल यही है कि कितने अन्तराल के बाद। यह चक्र छोटा या लम्बा हो सकता है।

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।
संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ।।
व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमंह परम् ।
योगं योगेश्वरात्कृष्णत्साक्षात्कथयतः स्वयम् ।। (18.74,75)

इस तरह मैंने यह आश्चर्यजनक, प्रेरक एवं आनन्ददायक महात्मा श्रीकृष्ण एवं अर्जुन के बीच का संवाद सुना है। व्यासदेव की कृपा से मैं प्रत्यक्ष रूप से इस परम गुह्य रहस्य को सुन सका। यह वह योग है जिसे स्वयं योगेश्वर कृष्ण ने ही कहा।

संजय कहते हैं कि उन्होंने वह आश्चर्यजनक संवाद सुना है जो आनन्ददायक एवं रोमांचकारक है। वे इस सत्य को स्वीकार करते हैं कि प्रधान रूप से व्यासदेव की कृपा से यह सम्भव हुआ है कि वे दृश्य में उपस्थित रह सके। उन्होंने ही उसे दिव्य शक्ति देकर स्वतंत्र और अदृश्य रूप से युद्ध क्षेत्र में विचरने एवं होने वाली घटनाओं के बारे में जानने का आशीर्वाद दिया था।

अर्जुन ने जो अनुभव किया और कहा और उसके उत्तर में कृष्ण ने जो आह्वान किया उसका निकट से साक्षी होना एक असाधारण भाग्य है। अर्जुन एक विशिष्ट, सब के लिये अनुकरण करने योग्य योद्धा थे। कृष्ण भी कोई साधारण ज्ञानी नहीं थे। संजय उनका महात्मा के रूप में वर्णन करते हैं। ऐसे एक घनिष्ठ संवाद के समय, ऐसी विशिष्ट स्थिति में उपस्थित रहना ही असाधारण है। धृतराष्ट्र को युद्ध के दृश्यों के बारे में कहने के मिशन के रूप में उन्हें यह अवसर मिला। उन्होंने जिन वचनों का उपयोग किया वे सचमुच रहस्य को प्रकट करने वाले हैं।

राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् ।
केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ।। (18.76)

हे राजन, श्रीकृष्ण और अर्जुन के इस अद्भुत और पवित्र संवाद को पुनःपुनः स्मरण करके मैं बार-बार हर्षित हो रहा हूँ।

कोई इस संवाद को सुनेगा, पढ़ेगा या स्मरण करेगा उस पर भी ऐसा ही एक आनन्ददायक प्रभाव पड़ेगा।

संजय कहते हैं कि कृष्ण का रूप विलक्षण है। यह हर तरह से अद्भुत है। यह मन में आनन्द एवं खुशी उत्पन्न करता है। स्मरण रहे अर्जुन की अपनी ही प्रार्थना के उत्तर में कृष्ण के विश्व रूप को देखकर वे भयभीत हो गए। संजय को ऐसी कोई परेशानी नहीं हुई, बल्कि वे रोमहर्षण एवं आनन्द से भर गये। यह स्पष्ट है कि जो कोई इस संवाद को सुनेगा, पढ़ेगा या स्मरण करेगा उस पर भी ऐसा ही एक आनन्ददायक प्रभाव पड़ेगा। यह आज भी वैसा है!

उपदेश की क्षमता, विशिष्टता और प्रासंगिकता के बारे में जब ऐसी टिप्पणी या मूल्यांकन किसी तीसरे व्यक्ति के द्वारा आता है, वह स्वयं स्पष्ट करने वाला है। भगवद्गीता के उपदेशों की सर्वोच्च प्रवृत्ति को उजागर करने के लिये इससे

अधिक बड़ी देन क्या होगी ?

ये सभी संवाद का मूल्यांकन एवं महत्त्व है। संजय को निष्कर्ष के रूप में कुछ और कहना है। उसने सम्पूर्ण घटना को देखा, सुना और समझा। जिन परिस्थितियों में यह संवाद हुआ और इसने जो तात्कालिक एवं भावी प्रभाव उत्पन्न किया, उनसे भी वह अच्छी तरह परिचित थे। इन सब के आधार पर यह उनकी निर्णय एवं भविष्यवाणी थी ।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।। (18.78)

जहाँ योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण हैं और जहाँ गाण्डीव-धनुषधारी अर्जुन हैं, वहीं पर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है। ऐसा मेरा मत है।

वे कृष्ण का वर्णन योगेश्वर के रूप में करते हैं। यह क्या सूचित करता है ? सम्पूर्ण चर्चा योग के बारे में है। प्रत्येक अध्याय का नाम एक विशेष प्रकार के योग पर दिया गया है। सब मिलाकर 18 अध्याय हैं और इसीलिये 18 योग साधना भी हैं। अक्षरशः योग का अर्थ वह पथ या प्रक्रिया है जो मन को आत्मा (मन के अपने ही सार तत्त्व) से मिलाती है। स्पष्ट है कि **योग चेतना के स्तर में होता है** जो विचार, भावनायें, स्मृति एवं ज्ञान उत्पन्न करता है।

ये सभी आन्तरिक रचनाएँ साधारणतः एक दूसरे से अलग मानी जातीं हैं। किन्तु आध्यात्मिक परिपक्वता से, जब साधक अपने ही भीतर अपने मन और बुद्धि की कार्य प्रणाली की जाँच करता है; निश्चित रूप से अलग प्रकटीकरण होता है।

क्या विचार विचारक या विचार करने वाले पदार्थ से अलग है ?

क्या विचार विचारक या विचार करने वाले पदार्थ से अलग है ? क्या द्रष्टा देखने की प्रक्रिया से अलग है? वस्तु कहाँ दर्शित है ? क्या कभी कोई वस्तु, जिसे हमलोग देखते हैं, हमारे शरीर के भीतर रहने के लिये वहाँ प्रवेश करता है? इन्द्रियाँ वहीं रहती हैं जहाँ वे हैं, और जिन वस्तुओं का वे अवलोकन करती हैं वे भी वहीं रहतीं हैं जहाँ वे हैं। वास्तव में 'संयोग' क्या, उनके बीच बाहर

से कोई बाहरी सम्पर्क नहीं होता है।

इन्द्रियों के द्वारा यह आन्तरिक चेतना है जो वस्तुओं की छवि बनाती है। छवि चेतना पर है, स्वयं चेतना ही है, चेतना के अलावा कोई दूसरा विषय नहीं है। यद्यपि हमलोग इसे वस्तु की छवि कहते हैं, यह केवल स्वयं चेतना का बनना या होना है। चेतना किसी दूसरे पदार्थ में नहीं बदलती है।

सच यही है कि चेतना कभी भी कुछ नहीं बनती है। इसकी ऐसी शक्ति है कि यह स्वयं अपने में छवि उत्पन्न कर सकती है। इन छवियों में से किसी में कोई अलग विषय, पदार्थ या सत्ता नहीं रहती है। यह केवल चेतना है चाहे आप इसे 'विषयी' कहें या 'विषय'।

इस तरह विचारक एवं विचार एक ही हैं। क्या प्रत्येक बार विचार विचारक में या विचार करने वाले पदार्थ में विलीन नहीं हो जाता है? इस तरह यह भिन्नता के सभी विचारों को एक मिथ्या बना देता है। अतएव यह विचार और विचार करने वाले पदार्थ का एक योग है। विचारक कोई पदार्थ नहीं केवल एक निर्देश, एक नाम या परिचय है।

उसी प्रकार मन में जो उत्पन्न होता है, उसे स्वयं मन से जोड़ा जा सकता है। ज्ञान, शंका, स्मृति, भावना आदि अपने ही स्रोत में मिल जाते हैं या विलीन हो जाते हैं। यही योग है जिसे अनुभव करने के लिये साधकों को सतत प्रयास करना चाहिये।

यही योग है जिसे अनुभव करने के लिये साधकों को सतत प्रयास करना चाहिये।

यह प्रक्रिया ज्ञान पर आधारित है, न कि ऊर्जा या पदार्थ संबंधी घटनाओं पर। संजय योग के विषय का वर्णन करने की कृष्ण की अद्‌भूत क्षमता से इतने प्रभावित हैं कि वे उन्हें योगेश्वर कहते हैं। सम्पूर्ण प्रस्तुतीकरण में एक अपूर्वता है। यह त्यागमय नहीं है बल्कि संलग्न करने वाला है। योग की परीक्षा कर्म करने में कुशलता से है, योगः कर्मसु कौशलम् (2.50)। कृष्ण कहते हैं कि शोक, शंका, भय एवं चंचलता को समाप्त कर स्थिर एवं शान्त होकर युद्ध करें, ''तस्माद् युध्यस्व भारत'' (2.18)।

संजय कहते हैं कि जहाँ भी योगेश्वर कृष्ण एवं आदर्श योद्धा अर्जुन अपने धनुष के साथ हैं, वहीं उत्कर्ष एवं कल्याण है। ये दोनों (कृष्ण और अर्जुन) **ज्ञान के साथ कर्म के मेल को सूचित करते हैं।** संजय आगे जोड़ते हैं कि **वहीं विजय, विभूति एवं न्याय का भी शासन रहेगा।**

मानव जीवन एक ओर समय पर कर्म करने से और दूसरी ओर आध्यात्मिक ज्ञान की विशिष्टता से कृतार्थ एवं कृतकृत्य होता है। यहाँ कृष्ण आध्यात्मिक दक्षता, स्पष्टता एवं समृद्धि को सूचित करते हैं। अर्जुन साहस, तत्परता एवं कर्म में विशिष्टता को सूचित करते हैं। दोनों के बीच एक घनिष्ठ संयोग होना चाहिये। केवल तभी मानव जीवन अर्थपूर्ण, रचनात्मक, जीवंत एवं कृतकृत्य होता है। यह निर्णय संजय सम्पूर्ण संसार के लिये देता है।

लोगों को इसे समझने एवं इसके आशय को मन में बसाने के लिये बहुत गंभीरता से चिन्तन करना चाहिए।

सृष्टि क्रियाकलाप एवं स्पन्दन से भरी हैं, निष्क्रियता या आलस्य के लिये कदापि कोई जगह नहीं है। जहाँ जानवर अपने सम्बन्धित स्वाभाविक आचरणों में व्यस्त रहते हैं, मानव से विवेक एवं बुद्धि को लागू करने की अपेक्षा की जाती है। धर्म एक परिणाम है जिसे विवेक लगातार उत्पन्न करता है, विवश करता है। इससे शासित होकर हमने धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को चार पुरुषार्थों (मानव प्रयास के विषय) के रूप में विकसित किया है।

यह पर्याप्त नहीं है कि हमलोग सक्रिय एवं प्रयत्नशील रहें। हमलोग जो कुछ सोचते, बोलते और करते हैं उन्हें आध्यात्मिक मूल्यांकन एवं उदात्तता द्वारा अवश्य चिन्हित करना चाहिये। यह युग्म बहुत प्रमुख है। कृष्ण-अर्जुन को एक दूसरे का पूरक के रूप में प्रस्तुतकर संजय यही वर्णन करते हैं।

कृष्ण आध्यात्मिक ज्ञान की विशिष्टता को और अर्जुन प्रशासन के शक्तिशाली हाथों को मूर्तिमान करते हैं। कभी-कभी प्रशासकों को कठोर कदम उठाने पड़ सकते हैं जो प्रायः मन और भावनाओं का दम घोंटनेवाले होते हैं और बुद्धि तथा औचित्य के लिये भ्रामक होते हैं जैसा कुरूक्षेत्र का दृश्य व्याख्या करता है।

प्रशासक का ज्ञान या अनुभव ही ऐसी जटिल परिस्थितियों से निबटने के लिये पर्याप्त नहीं होगा। परिणाम एक गहरी दलदल एवं निर्बलता होगी।

केवल आध्यात्मिक विशिष्टता की अपूर्व उदात्तता से शोभित होकर प्रशासन प्रभावशाली तरीके से कार्य कर सकता है।

इन सभी संदर्भों में एक मात्र समाधान सब को अपनाने वाला और सब कुछ सुलझाने वाला आध्यात्मिक ज्ञान होगा जिसका प्रदर्शन पर्याप्त रूप में कृष्ण करते हैं। यह स्पष्ट है कि केवल आध्यात्मिक विशिष्टता की अपूर्व उदात्तता से शोभित होकर प्रशासन मानसिक या नैतिक घुटन एवं कमजोरी से मुक्त होकर प्रभावशाली तरीके से कार्य कर सकता है। नाशवान से संघर्ष करने एवं हितकारी को प्रोत्साहित करने के लिए धैर्यपूर्ण स्व-विवेक, आन्तरिक शक्ति एवं दृष्टिकोण अनिवार्य है जैसा हमलोग स्वयं अर्जुन में पाते हैं। यह आज भी उतना ही सच है जितना 5000 वर्ष पहले महाभारत युद्ध के समय था।

(समाप्त)

आश्रम के प्रकाशन का नया ई-मेल

e-mail id : **publications.ashram1@gmail.com**

- किताब, सीडी, डीवीडी और विचारसेतु/विचारसरणी प्राप्त करने के लिए।
- आश्रम के प्रकाशन संबंधित जानकारी के लिए।
- आश्रम के ई-मेल न्यूज लेटर्स ('Inner Treasure' & 'Verses for Introspection') को प्राप्त करने के लिये।

अन्य सभी विषयों के लिए कृपया आश्रम के ई-मेल Ashram e-mail id : **ashram1@gmail.com** का प्रयोग करें।

गुरूभक्ति से धन्यता

[27 वर्षों में यह पहली बार था कि पूज्य स्वामीजी की जयंती पर माँ उपस्थित नहीं थीं। आमतौर पर प्रत्येक वर्ष जयंती समारोह का आरम्भ माँ अपने आर्शीवचनों से करतीं हैं। ब्रह्मचारिणी नम्रता स्वरूपा तथा दिल्ली के भक्तगणों के प्रयास से माँ के अभिभाषण की वीडियो रिकार्डिंग की गयी एवं इसे जयंती दिवस पर प्रसारित किया गया। यह उनके संदेश की प्रतिलिपि है।]

स्वामिन्नमस्ते नतलोकबन्धो
कारुण्यसिन्धो पतितं भवाब्धौ ।
मामुद्धरात्मीय कटाक्षदृष्टया
ऋज्यातिकारुण्यसुधाभिवृष्टया ।। विवेकचूड़ामणि 35

जय गुरु। जय गुरु । जय गुरु । प्रणाम स्वामीजी। आप सभी को मेरा प्रेम जो आविर्भाव (पवित्र अभिव्यक्ति) के दिवस या हमारे पूज्य गुरुदेव की जयंती पर एकत्रित हुए हैं।

27 वर्ष पूर्व मैं आश्रम में आयी थी। मेरी यह इच्छा थी कि मैं गुरु के चरणों में रहकर उनकी यथा संभव सेवा कर सकूँ। पिछले 27 वर्षों में सिर्फ पूज्य स्वामीजी की जयन्ती, गुरुपूर्णिमा या माताजी की महासमाधि दिवस जैसे विशेष अवसर पर ही नहीं बल्कि जब भी स्वामीजी आश्रम में रहे हैं - मैं भी वहाँ रही हूँ।

इस बार मैं वहाँ आने में सक्षम नहीं हूँ। परन्तु मैं हृदय से वहीं हूँ। मेरे पूज्य स्वामीजी की कृपा है कि मैंने यह कभी नहीं महसूस किया कि मैं उनसे दूर हूँ। मैं स्वामीजी से फोन पर बात करते हुए कह रही थी ''स्वामीजी आपकी जयंती आ रही है और मैं यहाँ हूँ। लेकिन आपने अपनी कृपा से मुझे यह महसूस करा दिया है कि आप सदैव मेरे हृदय में हैं।''

प्रेम और गीता के गृह में, जिस कमरे में हम रह रहे हैं, मेरे पलंग की दायीं ओर स्वामीजी की बड़ी तस्वीर है। बायी ओर छोटी तस्वीर है, जिसे मैं आश्रम से लायी थी, जो सदा मेरे साथ रहती है। लेकिन ये तस्वीरें आवश्यक नहीं हैं। मैं महसूस करती हूँ कि स्वामीजी सदैव मेरे हृदय में हैं।

फिर भी यह दिव्य आविर्भाव का दिन निकट है। मैं आश्रम के विषय में सोच रही हूँ - हमारा सुन्दर आश्रम, दिव्य वातावरण, सुखदायक हवा, शांति,

नारियल के पेड़, वहाँ के लोग, काम कर रही महिलाएँ, आए हुए भक्तगण, सारी हलचल, अन्नक्षेत्र, रसोइये - ये सभी मेरे मन की आँखों के सामने साफ नजर आ रहा है और मैं स्वयं को खुश पा रही हूँ। मैं जानती हूँ कि यह बहुत सुन्दर दिन होगा। सभी के लिए सुखद होगा।

आप सभी को पता है कि मैं आप सब से दूर, दिल्ली में हूँ। 8 अप्रैल को मेरे दोनों घुटने की सर्जरी कर घुटना प्रतिस्थापित किया गया। एक माह बीत गया है। अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद मैं CIRD स्वस्थ होने के लिए गई। स्वामीजी एवं नूतन स्वामीजी वहाँ तभी भी थे। वे 24 को गए। 25 को मैं स्टेपल्स निकलवाने अस्पताल वापस गयी। वहाँ से हम प्रेम और गीता के घर ग्रेटर कैलाश आए। उन्होंने मेरी आरोग्यता के लिए बड़े प्रेम से सभी इंतजाम किए। वहाँ रहना बहुत ही सुखद रहा।

स्वामीजी के कार्यक्रमों के लिए इस बार जब हम दिल्ली आए तो मेरी सर्जरी निर्धारित थी। सभी भक्तगण इस कार्यक्रम के आयोजन में लगे थे। हरपल मेरे लिए धन्यता से परिपूर्ण था। पूज्य स्वामीजी, नूतन स्वामीजी, मेरे, तथा प्रसन्ना और नम्रता के प्रवास के दौरान, आश्रम के प्रत्येक सत्संगी एवं अन्य श्रद्धालु वहाँ के कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाते रहे ताकि स्वामीजी को इसकी चिंता न हो।

यहाँ CIRD में श्रद्धालुओं ने कार्यक्रम के संचालन के लिए आवश्यक प्रबंध किए थे। सार्वजनिक वार्ता, अन्न वस्त्र दान सत्रम् और सत्संग। साथ ही साथ मेरे अस्पताल में भर्ती होने की भी देख रेख की गई। श्रद्धालु भोजन तथा अन्य वस्तुओं के लिए प्रयासरत थे। हर कोई अपनी तरफ से इस कार्यक्रम के लिए उत्साहित थे।

मैं कह रही हूँ - 'यह बहुत ही आनन्ददायक था।' क्योंकि मैं जानती हूँ हम सब आध्यात्मिक प्रेम से बँधे हैं जो हमारे गुरु के लिए है। हम भले ही विश्व के कई स्थानों पर बिखरे हुए हैं, पर हम सब उनके लिए एक साथ प्रेम से बँधे हुए हैं। हर कोई उनकी सेवा करना चाहता है, अपनी भावनाओं को व्यक्त करना चाहता है। यह कितना सुन्दर है।

यह एक बड़ी सर्जरी थी। लेकिन पूज्य स्वामीजी के प्रेममय आशीर्वाद तथा संसार के हर कोने से भक्तगणों का प्यार, चिंता, स्नेह मिलने के कारण अब मैं अच्छी हूँ और स्वस्थ हो जाऊँगी। हम जानते हैं कि इस सर्जरी में स्वस्थ होने

में काफी लम्बा समय लगता है। प्रगति धीमी है लेकिन स्थिर है। मैं ठीक हूँ, मैं सहायता से चलती हूँ और आशा है कि मैं स्वयं ही शीघ्र चलने लगूँगी।

चैन्नई, बैंगलुरु, बनारस, जमशेदपुर और अन्य स्थानों से कई श्रद्धालु CIRD स्वामीजी के कार्यक्रम, मेरे अस्पताल में भर्ती, स्वामीजी तथा नूतन स्वामीजी के भोजन तथा अन्य जरूरतों में सहायता करने के लिए आए।

नम्रता और माला (ब्रह्मचारी प्रसन्ना की बहन) मेरे साथ थी। माला नैरोबी से आयी थी। दोनों हमेशा मेरे साथ रहीं। हम तीनों, प्रेम और गीता के स्नेह एवं देखभाल के साथ उनके घर पर हैं। मैं सोचती हूँ कि वह पूरा स्थान ही आध्यात्मिक एवं दिव्य हो गया, क्योंकि हम सदा अपने गुरु तथा उनके संदेश की ही बात करते हैं।

आप देख सकते हैं अश्रु मेरे गालों पर बह रहे हैं। ये भक्ति के आँसू हैं। जब भी मैं उस समय की बात करती हूँ जब मैं आश्रम में आयी थी, मेरा मन अतीत में जाता है और उन क्षणों तथा उन भावनाओं को पुनः लाता है जब मैंने सब कुछ त्याग कर गुरु के चरणों में आश्रय लिया था। मैं उनकी योग्य शिष्या के रूप में उनके साथ रहना चाहती थी।

हम अपने श्रद्धा और प्रेम के कारण उनकी जयंती या गुरुपूर्णिमा पर आते हैं। लेकिन मैं कहना चाहती हूँ कि हम अपनी भक्ति एवं प्रेम हरपल बनाये रखें। हमें उनका योग्य संतान बनना है। हमें समझना होगा कि वे क्या हैं, उनका संदेश क्या है। कैसे हममें से हर एक को उनके संदेश को आत्मसात् करना है, उसे जीवन में लाना है - दूसरों की सहायता के लिए तथा संसार में हर किसी की सहायता करने के लिए।

हमें उन्हें देखकर सीखना है। हम उनके गुणों को जोड़े और आत्मसात् करें। सबकुछ बहुत सरल हो जाएगा जब हम उनके सबसे बड़े गुण पर ध्यान केंद्रित करें - वह है सबसे प्यार करना, सबको गले लगाना। मैं सोचती हूँ कि हमारा भी यही लक्ष्य होना चाहिए कि सबसे प्रेम करें, सबको गले लगाएँ चाहे उसकी प्रकृति कुछ भी हो। तब सब कुछ सरल हो जाएगा।

इतनी उम्र में भी देखो, वे लोगों को अज्ञान से जाग्रत करने के लिए कितना कड़ा परिश्रम करते हैं, बिना थके लोगों से मिलना, फोन पर बात करना, उनके मन

की शांति के लिए पत्र लिखना और इन सब के साथ प्रेम बरसाते हैं। क्या हम इससे एक छोटी बूँद नहीं ले सकते ? मैं आज 13 मई 2014 को कहना चाहती हूँ कि हम सब सबके साथ प्रेम से रहें। जब मैं स्वामीजी के विषय में सोचती हूँ तो मुझे ऐसा महसूस होता है कि मैं सिर्फ प्रेम, प्रेम और प्रेम से आप्लावित हूँ।

मुझे ज्ञात है, आप सभी स्वामीजी को सुनने के लिए उत्सुक हैं। कार्यक्रम आरंभ होने वाला होगा। मैं एक पत्र लिखना चाहती थी, जिसे पढ़ा जा सकता था। परन्तु नम्रता ने ऐसा सोचा। अश्विनी के साथ प्रेमजी, गीता, माला और माया ने इस विडियो रिकार्डिंग को संभव बनाया। मैं इसके लिए तैयार नहीं थी, लेकिन मैं सोचती हूँ यह अच्छा रहा।

मैं आप सभी के साथ हूँ। स्वामीजी को मेरा बार-बार प्रणाम। मैं हमेशा सोचती थी कि साष्टांग प्रणाम सिर्फ शारीरिक कार्य नहीं होना चाहिए। मैं स्वयं की पहचान बिना उनके चरणों में रहना चाहती थी। स्वामीजी, मैं हमेशा सिर्फ आपकी भक्त बनकर रहना चाहती हूँ। आपका सान्निध्य हरपल, हरक्षण पाना चाहती हूँ।

मेरी कामना है और प्रार्थना है कि आपका सान्निध्य हमें कई-कई वर्षों तक प्राप्त हो। आप स्वस्थ रहें। मेरी इच्छा और विनती है कि आप हमारी सुनें जब हम आपसे कहें कि आपको विश्राम करना चाहिए और बाहरी कार्यक्रम अधिक न करें।

लेकिन मैं जानती हूँ कि आपका हृदय सबके लिए रोता है। आपका मन चाहता है कि आप संसार के हर कोने में पहुँचे, इसीलिए आप इतना कार्य करते हैं। काश, हम भी आपकी तरह हो सकते ताकि हम हर कदम पर आपके साथ ही चल सकते। साथ ही साथ हमें यह महसूस होता है कि आप कुछ ज्यादा ही कर रहें हैं। हम सब की विनती है स्वामीजी आप अपने स्वास्थ्य पर भी थोड़ा ध्यान दें। यह हमारा अनुरोध है।

मैंने बात करते समय काफी आँसू बहाए। मुझे महसूस हो रहा है कि इन आँसुओं ने मेरे हृदय को मधुरता से पूर्ण कर दिया है। मेरे प्रिय बच्चों, मैं आप सभी से प्रेम करती हूँ। मैं आपसे प्रेम करती हूँ क्योंकि आप स्वामीजी के साथ हैं, आप स्वामीजी से प्रेम करते हैं।

जय गुरु । जय गुरु । जय गुरु ।

भक्ति के बिना जीवन - मात्र एक भार

माँ गुरुप्रिया

भारः परं पट्टकिरीटजुष्टं
अप्युत्तमाङ्गं न नमेन्मुकुन्दम् ।
शावौ करौ नो कुरुतः सपर्यां
हरेर्लसत्काञ्चनकङ्कणौ वा ।।

श्रीमद्भागवतम् 2.3.21

मुकुट या सुंदर पगड़ी से सज्जित शीश भी यदि भगवान मुकुंद के चरणों में नहीं झुकता है तो वस्तुतः एक भार है। हस्त कितने भी सुंदर हों, स्वर्ण-कंगन से सज्जित हों, वस्तुतः एक शव के समान हैं, यदि वे भगवान हरि की उपासना में संलग्न नहीं हैं।

जीवन पूर्णतः दुख और पीड़ा से भरा है। यह सत्य है कि मानव जीवन प्रत्येक क्षण सुख से परिपूर्ण है, परन्तु प्रत्येक सुख में दुख मिश्रित होता है। भय, चिन्ता और तनाव मानव जाति का सतत् साथी बनकर रहता है।

हमारा शास्त्र कहता है कि मानव जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य भगवान के प्रति भक्ति बढ़ाना और उसे अपने हृदय में अनुभव करना है। जब सर्वशक्तिमान भगवान के प्रति भक्ति पैदा होती है, मनुष्य स्वेच्छा से भगवान के चिंतन में संलग्न हो जाता है। मन, जो कि क्षणिक सांसारिक सुख के आकर्षण के पीछे दौड़ता है, अतिशीघ्र भगवान की ओर घूम जाता है। सांसारिक वस्तु मन के उत्तेजना का प्रमुख कारण है। भगवत् चिन्तन उनके प्रति अरुचि उत्पन्न करता है।

भगवान का प्रेम और स्नेह के साथ स्मरण कर जब मन आनन्द प्राप्त करता है, तब ऐसे पवित्र विचार और स्मरण से मन की अशुद्धि, जो कष्ट का कारण होता है, पूर्णतः मिट जाता है और मन भय और चिन्ता से मुक्त होकर सर्वोच्च शांति की स्थिति प्राप्त करता है।

अतः सर्वोच्च शांति की प्राप्ति हेतु उपासना के द्वारा भगवान के प्रति अगाध

भक्ति को विकसित करना है। इस उपासना का मुख्य अर्थ क्या है? उपासना नियमित दिनचर्या नहीं है; भगवान को प्रत्येक विचार, वचन और कर्म में स्मरण रखते हुए सर्वत्र और प्रत्येक वस्तु में देखना है।

एक भक्त की वाणी भगवान के गुणगान कर, उसके कान भगवान के सुकृत और श्रेष्ठता को सुन, उसके हाथ उपासनामय कार्य कर, उसका मन भगवान के ऊपर चिंतन कर, उसकी आंखें प्रत्येक में भगवान को देखकर स्वयं को भगवान की सेवा में लीन कर सकता है। सम्पूर्ण रचना को भगवान ही समझते हुए सिर सष्टांग प्रणाम में झुकना चाहिए।

जब एक मनुष्य इस भाव से रहता है, उसे सर्वोच्च मानसिक शान्ति प्राप्त हो सकती, जबकि उसके अधिकार में कुछ भी नहीं। दूसरी ओर कोई अत्यधिक धन, ख्याति, पहचान, प्रतिष्ठा को अर्जित कर सकता है, परन्तु उसका जीवन उसके लिए भार हो जाता है अगर वह अपवित्र भाव से रहता है।

अगर धनी होते हुए कोई गर्वित और दूसरों से श्रेष्ठ अनुभव करता है, तब धन भी मन के लिए बोझ हो जाता है। धन के नष्ट हो जाने के भय से वास्तव में मन भयभीत हो जाता है। सम्पत्ति मन के सुख और शान्ति का कारण बन सकता है पर उसके प्रति लगाव से छुटकारा न पाने पर वह सम्पत्ति मन का बोझ बन जाता है।

यह श्लोक हमें बताता है कि धन सम्पत्ति आदि का संग्रह, सिर पर कीमती रेशमी पगड़ी या बहमूल्य रत्न जड़ित मुकुट, किसी के लिए एक बोझ के समान हो जाता है, अगर उसका शीश भगवान के प्रति नम्रतापूर्वक नहीं झुकता है। तब ऐसा आभूषण सुसज्जित सिर शरीर के लिए एक बोझ हो जाता है। आभूषण किसी उद्देश्य की पूर्ति नहीं करते हैं।

जब तक एक जीवन है, अपने हाथों को उपासना क्रिया - जैसे फूलों और तुलसी के पत्तों को चुनना और साफ करना - या मंदिर की सफाई - उसे रंगोली आदि से सजाना - या संत पुरुषों की सेवा आदि करने में संलग्न रखना चाहिए। पवित्र और भक्तिमय कार्य करने में मन हमेशा भगवान के

चिंतन में लीन रहता है। यह श्लोक उद्घोषणा करता है कि हाथ, जो उपासना क्रिया नहीं करता, बिल्कुल बेकार है - जैसे मृत शरीर के हाथ जबकि वे कीमती और चमकदार स्वर्ण आभूषण से भी सुसज्जित हों।

इस श्लोक का गायन् मन को शक्ति प्रदान करती है जब हम समझते हैं कि धन सम्पत्ति आदि प्राप्त करना ही सर्वोच्च लक्ष्य नहीं है। जीवन तब तक बेकार है जब तक कि मन जीवन के प्रत्येक क्षण को भगवान के प्रेममय स्मरण के द्वारा दिव्य नहीं बना देता है। किसी के जीवन में पैसा या सोना नहीं अपितु भगवान के प्रति भक्ति ही सबसे बड़ा धन और संग्रह है।

शब्दार्थ :

भारः = भार; **परं** = महान्; **पट्टकिरीटजुष्टम** = रेशमी पगड़ी/मुकुट से सज्जित; **अपिः** = भी; **उत्तमाङ्गं** = शरीर का उपरी भाग, सिर; **न** = नहीं; **नमेन** = नीचे झुकना; **मुकुन्दम्** = भगवान मुकुंद; **शावौ** = मृत-शरीर के लिए; **करौ** = दोनों हाथ; **नौ** = और नहीं; **कुरुतः** = करता है; **सपर्याम्** = पूजा; **हरे** = भगवान हरि का; **लसत्काञ्चनकङ्कणौ** = स्वर्ण निर्मित चमकते कंगन; **वा** = लेकिन भी।

अन्वय :

पट्टकिरीटजुष्टं अपि उत्तमाङ्गं परं भार : (यदि) मुकुन्दं न नमेत्। लसत्काञ्चनकङ्कणौ करौ शावौ (करौ), (यदि) या हरेः सपर्यां नो कुरुतः।

■

आप अपने शरीर के निमित्त इसे भोजन आश्रय और वस्त्र देकर उसकी सहायता कर सकते हैं। आप अपने मन के निमित्त उसे शांति एवं संतुष्टि प्राप्त करने के लिए कष्ट देने वाले से मित्रवत होकर उसकी सहायता कर प्रोत्साहित कर सकते हैं। आप अपनी बुद्धि के निमित्त उसकी सहायता एवं प्रोत्साहन के लिए उच्च बुद्धिमत्ता, संस्कृति और चरित्र प्रदान कर सकते हैं।

- स्वामीजी

सांसारिक जीवन का परिशोधन

2 जनवरी 2001

पूज्य गुरुदेव

आपके पवित्र चरणों में मेरा प्रणाम। माँ और नूतन स्वामीजी को भी मेरा प्रणाम।

काफ़ी समय से मैंने स्वामीजी को कुछ नहीं लिखा। सचमुच समझ में नहीं आया कि क्या लिखूं। जो भी चाहिये, स्वामीजी द्वारा वह सभी कुछ बताया जा चुका है। विचारसेतु के लेख भी लगातार निर्देशों पर ज़ोर देते रहे हैं। स्वामीजी का एक बड़ा चित्र मेरे घर में है, जिसकी नियमित पूजा की जाती है। उनके रिकॉर्ड किये गये प्रवचन भी समय-समय पर सुने जाते हैं। फ़िर भी आध्यात्मिक उन्नति बहुत ही धीमी है। क्यों ?

क्या यह इसीलिये कि एक निर्देश का पालन मैं नहीं कर पाया, जो सभी शास्त्र देते हैं, और वह है गुरु संगति? मैं विवश हूँ। क्या करूँ? सांसारिक जीवन, और उसके कारण कार्यक्षेत्रीय जीवन, इनका बंधन जो और अधिक प्रबल है।

पीछे मुड़कर देखता हूँ तो सांसारिक और कार्यक्षेत्रीय जीवन, दोनों ठीक ही चल रहे हैं। कोई विशेष बाधायें या कठिनाईयाँ नहीं हैं। आपके आशीर्वाद से इन दोनों क्षेत्रों के कर्तव्य पालन में मैं उत्तेजित या चिंतित नहीं होता। फ़िर भी 'पूर्णता' का आभास नहीं। कभी कभी मन आध्यात्मिक भावों से आप्लावित हो जाता है और स्थूल जीवन का खोखलापन प्रत्यक्ष ही दिखता है। पर, हाय, रक्त और वैवाहिक संबंधों का ज़ोर और भी अधिक सशक्त रूप से बांधता है।

मुश्किल यह है कि न केवल मुझे अपने मन की कमजोरियों का सामना करना पड़ता है, पर उसके ऊपर मुझे एक ऐसे वातावरण में, ऐसे लोगों के साथ मिलना-जुलना पड़ता है, जिनके कार्य और जिनकी सोच आध्यात्मिक उन्नति के बिल्कुल अनुकूल नहीं। फलतः मेरा मन भी उनके साथ चलना पसन्द करता है।

फिर क्या किया जाय ? अपनी साधना को इस विश्वास के साथ बढ़ाये जा रहा हूँ कि किसी दिन, किसी समय, मैं अपने मन की दुर्बलताओं पर विजय पा सकूंगा।

पर मेरा अपना अहंकार मुझे वह परम समर्पण नहीं करने दे रहा। मैं स्वामीजी से आशीर्वाद के लिये प्रार्थना कर रहा हूँ ताकि मेरा समर्पण और तीव्र हो।

गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण बचपन से ही मन से एक ही धुन सवार था कि अच्छी तरह पढ़कर कोई अच्छी नौकरी ढूंढनी है और ढेर सारा धन कमाना है। गृहस्थ बनने का निश्चय किया तो धन का उपार्जन और उसकी बचत इन दोनों का प्रयोजन अधिक शक्तिशाली हो चला है।

स्वामीजी, मेरे मन में जो भी आया, मैं लिखता चला गया, क्योंकि मुझे लिखना अच्छा लग रहा था। हो सकता है मेरे कुछ विचार असंगत हों। मुझे क्षमा कर दीजिये। मुझे इस पथ पर चलने के लिये अधिक से अधिक शक्ति चाहिये जिसके लिये आपके आशीर्वाद की आवश्यकता है।

स्वामीजी के आशीर्वाद के लिये मैं कुछ समय के लिये आश्रम आऊंगा। इस बार इतना ही फ़र्क है कि अपने बच्चे और उसकी माँ को भी पहली बार साथ लाऊंगा। स्वामीजी, मुझे क्षमा कर दीजिये कि मैं आश्रम में रह नहीं पाऊंगा। मुझे डर है कि यदि उनके साथ आश्रम में रहा तो संभव है कि मेरा मन आश्रमवास का पूरा लाभ नहीं उठा पायेगा।

स्वामीजी, कृपया मुझे आध्यात्मिक ज्ञान का आशीर्वाद दें। नूतन स्वामीजी और माँ को मेरा प्रणाम।

भक्ति के साथ ***R***

****

प्रिय और अनुगृहीत R

15 जनवरी 2001

हरिः ॐ तत् सत्। तुम्हारा 2 जनवरी का स्नेहपूर्ण पत्र मिला।

जो कुछ भी तुमने लिखा, वह मैंने पढ़ा। सभी का अपना जन्म है और उससे जुड़ा हुआ वातावरण, चाहे वह कुछ भी हो। जब कोई बड़ा होकर एक युवा बन जाता है, तो उसके पास यह अवसर होता है कि वह अपने अतीत में जो कुछ भी हो चुका है, निरीक्षण करें और भविष्य में जो होना चाहिये उस पर अपना निर्णय लें। यही वयस्क होने का चिन्ह है। मित्र और गुरुजन इस विषय में एक

महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

तुम्हारे जीवन का वह चरण शायद बीत चुका है। अब उस विषय पर अधिक चिंता मत करो। अब अपने विचारों और इच्छाओं को उचित रूप दे सको तो भी काफ़ी है। जीवन हर समय अनुभवशील है। उसी प्रक्रिया से वह हमें समृद्ध और आलोकित करता है। ऐसी समृद्धि और आलोक होते हुए तुम्हें अपने दृष्टिकोण पर पुनः सोचना होगा। जो बीत गया उसकी उपयुक्तता केवल भविष्य को संवारने तक ही है। इसलिए अपने अतीत से संबंध बनाने में, और उसके खिलाफ़ प्रतिक्रिया के विषय में सतर्क, परंतु निडर रहो।

क्या तुमने भजगोविंदम नहीं पढ़ा? शंकर स्पष्ट रूप से वेतनभोगियों के प्रति इशारा करते हुए कहते हैं :

यल्लभसे निजकर्मोपात्तं वित्तं तेन विनोदय चित्तम्।

अपने कार्य से जितना भी धन तुम्हें मिलता है, उससे संतुष्ट रहो। अधिक की अभिलाषा मत करो। धन के प्रति लोभ और मोह से दूर रहो। क्या यह एक व्यावहारिक अनुशासन नहीं जो साथ ही साथ मन का परिशोधन भी करेगा?

अपने वर्तमान जीवन के प्रति घृणा मत करो, उसे दोष मत दो। उसे हृदय से, खुशी से स्वीकार करो। तुम्हारा छोटा बच्चा ईश्वरीयता की अभिव्यक्ति है। 'अदृश्य हाथों' ने ही उसके शरीर और अंगों का निर्माण किया है। उसे देखते हुए उसी अदृश्य, असीम ईश्वर का स्मरण करो। क्या ऐसा करोगे? उसी प्रकार जब अपने या पत्नी के साथ रहोगे, तो वही पवित्र विचार तुम्हारे मन में आना चाहिये।

गृहस्थ जीवन के हर काम में उदात्तीकरण, समृद्धि, उन्नति और दिव्यता के भावों को स्थापित करो।

संकीर्णता के शिकार मत बनो। उदार बनो। अल्पव्ययी हो सकते हो, पर कंजूस मत बनना। मन को धनी बनाओ। एक गरीब व्यक्ति के पास भी एक स्वस्थ और धनी मन हो सकता है। और एक धनी व्यक्ति के पास बिल्कुल विपरीत – एक अस्वस्थ और गरीब मन भी हो सकता है। मन की भाषा और प्रक्रिया ➲

आप कहाँ हैं ?

आशा शिवशंकरन्

आप कहाँ है मेरे प्रभु? मेरे नीलाम्बर प्रभु ?
देर तक पहाड़ियों पर, घाटियों में भटकता रहा।
क्या मैंने आपका बांसुरी के मंद स्वर को नहीं सुना ?
हाँ, यह आपकी धुन थी मेरे प्रभु
जिसने मेरे आतुर कर्णों को दुलार कर फुसफुसाया था।
कटहल के वृक्ष के विस्तार में
क्या मैंने आपके मयूर पंखों को नहीं देखा ?
वर्षा-ऋतु के कृष्ण घनों में
क्या मैंने आपके दिव्य नील स्वरूप को नहीं देखा ?
हाँ यह आप थे, मेरे प्रभु,
मैंने आपके लुभावन स्मित को देखा
आपके पदचिन्हों की धूल में लिपटने के लिए
मैं निरर्थक ही आपके पदचिन्हों को तलाशता रहा
हाय! अक्रूर भाग्यवान था,
जिसने आपके परिमल में स्नान किया!

➲ कुछ और है, शरीर का नहीं। अधिकतर जिज्ञासु इस विषय में भ्रमित रहते हैं। मुझे लगता है तुम्हें भी सब कुछ और खरेपन से समझना चाहिये।

आओ। बच्चे के साथ भी रह सकते हो, यदि उसकी देखभाल ठीक से हो सके, उसके खाने और अन्य आवश्यकताओं का सठीक प्रबंध हो। उसे भी लाभ पहुंचे।

माँ और नूतन स्वामीजी तुम्हें स्नेहमय शुभकामनाएँ देते हैं।

स्नेहमय शिवाशीष,

स्वामीजी

नित्यता में विलय

मदनलाल चढ्ढा (दिल्ली)

28 अप्रैल को, 85 वर्षीय मदनलाल चढ्ढा ने अस्पताल में अंतिम सांसें लीं।

मदन ने मुझसे ब्रह्मविद्या की दीक्षा ली और तबसे वह मेरे प्रति समर्पित था। जब भी वे CIRD दिल्ली आते, सदैव शांत और सरल तथा पृष्ठभूमि में रहना पसंद करते और विशिष्ट बन जाते।

इस वर्ष वसुंधरा में अन्न-वस्त्र-दान-सत्रम के दौरान मैंने उन्हें एक कोने में शांत खड़ा पाया। मैंने उन्हें पास बुलाया और कुछ दान-सामग्रियों को वितरित करने के लिए कहा। उन्होंने अपना सिर हिलाया और नहीं आए। मुझे आश्चर्य हुआ उन्होंने ऐसा क्यों किया। अग्रिम परिणाम से सचेत होने पर, मैंने अनुभव किया वे दुर्बल थे और अधिक प्रयास टालना चाहते थे।

उनके प्रति, जिन्होंने पूरे परिवार की देखभाल एक पिता के समान को, उनके भाई के स्वर कृतज्ञता पूर्ण हैं। उन्होंने एकल रहकर पूरी तरह से परिवार के प्रति समर्पण का विकल्प चुना। सतीश चढ्ढा कहते हैं कि अपनी अल्प इच्छाओं और सरल आदतों के साथ वे प्रकृति के अत्यन्त निकट थे और फूल तथा फलों के वृक्ष लगाते थे।

मदन सदैव मेरे हृदय में रहेंगे। उन्हें पूर्ण शांति एवं मुक्ति मिले।

स्वामीजी

सदस्यता शुल्क	वार्षिक	3 वर्ष	6 वर्ष	12 वर्ष
भारत	50/-रु	125/-रु	250/-रु	500/-रु
विदेश (भाया एयर)	1000/-रु	2500/-रु	5000/-रु	10,000/-रु

समाचार एवं टिप्पणियाँ

गुरुपूर्णिमा और वार्षिक रिट्रीट : **12 जुलाई** को आश्रम में पवित्र गुरुपूर्णिमा मनाई जाएगी। पूर्ण तया 'साधना' और गुरु सन्निधि पर केंद्रित यह **छः दिवसीय वार्षिक कार्यक्रम 13 से 18 जुलाई** तक मनाई जाएगी। पूर्ण रूप से भरा गया पंजीकरण फॉर्म (ई-मेल एवं डाक द्वारा अनुरोध पर उपलब्ध) जमा करने की अंतिम तिथि **10 जून** है। **टेलिफोन पर रजिस्ट्रेशन मान्य नहीं है। 20 जून** तक पंजीकरण निश्चित की जाएगी। चुने गए प्रतिभागी **11 जुलाई** तक आश्रम पहुँचेंगे और **19 जुलाई** को वापस आऐंगे।

❑ **पूज्य स्वामीजी की 81 वीं जयन्ती** : आश्रम में 13 मई को उत्सव की विशिष्टता के साथ मनाई गई। दूर और समीप के करीब 500 लोगों ने इसमें भाग लिया।

श्रीमती पद्मा एवं श्री बालकृष्णन (हैदराबाद) ने सभी की ओर से पाद-पूजा की। गुरु-अर्चना से पूर्व, पूज्य माँ का रिकॉर्डेड विडियो संदेश आश्रम के विभिन्न स्थानों पर लगाए गए CCTV स्क्रीन पर दिखाया गया। पूज्य माँ घुटनों के ऑपरेशन के बाद दिल्ली में स्वास्थ्य-लाभ कर रही हैं। भावनाओं से युक्त, माँ का संदेश, सभी के लिए गुरु-भक्ति पर एक हृदयस्पर्शी पाठ था। इसका मलयालम अनुवाद सुमेश ने पढ़ा। संपूर्ण कार्यक्रम के इंटरनेट पर वेब कास्ट द्वारा प्रसारण ने दुनिया भर के अनेक लोगों को इसमें सम्मिलित किया।

उपस्थित लोगों में व्यासतपोवनम के सन्यासी, साथ में साधु पद्मनाभन जी, डॉ. ई. श्रीधरन, ऑर्किटेक्ट श्री विजयन, श्री रविन्द्रन नायर आदि थे। पाद-पूजा से पूर्व, श्रीमती कुमारी वेनुगोपाल और श्री श्रीनिवास का सुमधुर भजन सत्र भक्तिपूर्ण एवं पवित्र था।

पाद-पूजा के पश्चात् जयंती दिवस के लिए पूज्य स्वामीजी का अंग्रेजी एवं मलयालम में संदेश हुआ।

अंत में, सभी ने पूज्य स्वामीजी के चरणों में पुष्प समर्पण कर प्रसाद ग्रहण किया और अन्नक्षेत्र में भक्ति भोजनम के लिए गए।

❖ **CIRD दिल्ली** : 12 मई की संध्या, दूसरे दिन के कार्यक्रम की तैयारी के लिए अनेक भक्त CIRD में ठहर गए। कार्यक्रम का शुभारंभ भक्तों के लिए माँ गुरुप्रिया जी के पूर्व रिकार्डेड संबोधन के साथ हुआ। श्रीमती शशि त्यागी एवं श्री आर. पी. त्यागी द्वारा गुरु-अर्चना की गई। इसके पश्चात पूज्य स्वामीजी का एक प्रेरक (रिकार्डेड) विडियो संदेश देखा गया। प्रसाद वितरण के पश्चात्, सभी ने जलपान किया। करीब 50 भक्तों ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

❖ **जमशेदपुर** : संध्या 6.30 बजे विज्ञान-भवन में कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। इस पुनीत समारोह में भाग लेने के लिए सभागार में लगभग 150 भक्त एकत्रित थे। सभागार और आसपास के स्थानों को भक्तों ने प्रेमपूर्वक पुष्प और रंगोली से सजाया था। नव निर्मित पूजा वेदी सभागार की पवित्रता को और अधिक बढ़ा रही थी। सभी उपस्थित लोगों की ओर से श्रीमती शांति ठाकुर एवं श्री पी. सी. ठाकुर ने गुरु-अर्चना की। उसके बाद सभी केन्द्रों पर आश्रम द्वारा भेजा गया। पूज्य स्वामीजी का विडियो संदेश देखा गया, संक्षिप्त हिंदी अनुवाद भी पढ़ा गया भक्तों ने पूज्य स्वामीजी के चित्र के सम्मुख पुष्प-समर्पण कर प्रणाम किया तथा भक्ति-भोजनम् ग्रहण किया। संपूर्ण कार्यक्रम पवित्र और तापसिक वातावरण में संचालित हुआ।

❖ **SIRD मलेशिया** : इस वर्ष पूज्य स्वामीजी की जयन्ती और भगवान बुद्ध की जयंती एक ही दिन होने के कारण मलेशिया में अवकाश का दिन था।

दिन के प्रारंभ में सांस्कृतिक विरासत कक्षा के छात्रों ने तबले (एक संगीतमय वाद्य) की संगत के साथ पूज्य स्वामीजी को भजन समर्पित किया। उसके बाद श्रीमती पुष्पा देवी एवं श्री थिलाइवरना ने, अंकल रामास्वामी द्वारा 108 नाम उच्चारण के साथ पाद-पूजा की, जिसमें सभी ने समवेत स्वर में भाग लिया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण पूज्य स्वामीजी का विडियो संदेश था। बड़े स्क्रीन पर पूज्य स्वामीजी की छवि को देखकर सभी प्रतिभागियों को ऐसा

लगा जैसे पूज्य स्वामीजी स्वयं वहाँ उपस्थित होकर हर भक्त के हृदय को व्यक्तिगत रूप से अपने संबोधन से स्पर्श कर रहे थे। अंत में पूज्य स्वामीजी की पादुका पर पुष्प-समर्पण के पश्चात् सभी ने प्रसाद ग्रहण किया। लगभग 70 भक्तों ने, जिसमें CHC के बच्चों के माता-पिता भी शामिल थे, कार्यक्रम में भाग लिया।

तत्पश्चात, SIRD में चल रही गतिविधियों के अवलोकन के लिए तथा संस्था के लिए नए उद्देश्यों की दिशा के लिए एक विशेष कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस आवश्यक सत्र का संचालन श्री सुमेश नायर एवं श्री विक्नेश्वरन् कानागसिंव्यम द्वारा सफलतापूर्वक किया गया। यह एक आत्म-निरीक्षण फोरम था जिसने भक्तों को SIRD की गतिविधियों और उसके सुधार के लिए सुझाव और परामर्श संबंधी बातों को रखने का अवसर दिया। इस कार्यशाला में लगभग 30 भक्त शामिल हुए। अन्नक्षेत्र की टीम ने प्रतिभागियों के लिए ब्रेकफास्ट एवं लंच का प्रबंध किया।

❖ **USA** : USA में जयंती कार्यक्रम का आयोजन दो स्थानों CIRD-NA (वर्जीनिया) एवं कैलिफोर्निया में हुआ।

❖ **CIRD-NA** : 11 मई को करीब 15 भक्त श्रीमती निशा गोविंदानी के आवास पर एकत्रित हुए। समारोह विष्णु-सहस्त्रनाम के समवेत पारायण के साथ प्रारंभ हुआ, जिसके बाद श्रीमती शांति एवं श्रीराम द्वारा अष्टोत्तर शत् नामावली के साथ गुरु-अर्चना की गई। भक्तों ने 'साँग ऑफ द सोल' के श्लोकों के पारायण के मध्य पूज्य स्वामीजी के चित्र पर पुष्प-समर्पण किया। उसके बाद स्वामीजी का विडियो संदेश देखा गया। सभी ने भक्ति-भोजनम् ग्रहण किया।

❖ **कैलिफोर्निया** : 13 मई श्रीमती मालिनी एवं डॉ अंशु वशिष्ठ के आवास में जयंती दिवस पर विशेष प्रबंध किया गया। भक्तों ने विभिन्न रंगो के गुलाब और दूसरे पुष्पों से पूज्य स्वामीजी के लिए एक पुष्पहार तैयार की। श्रीमती मालिनी एवं डॉ अंशु ने पाद-पूजा की। पवित्र वातावरण में लाइभ स्ट्रीम वेब

कास्ट के साथ भक्तों ने 108 नामावली का सुनते हुए उच्चारण किया, पश्चात् पूज्य स्वामीजी के जयंती संदेश का सीधा प्रसारण देखा। अंत में, आश्रम द्वारा प्रत्येक केंद्र को भेजी गई पूज्य स्वामीजी के विशेष विडियो संदेश को देखा।

❖ **मुंबई** : श्रीमती शांति विश्वनाथन के आवास पर समारोह का आयोजन हुआ। श्रीमती रेणुका एवं श्रीमती चंद्रिका ने पाद-पूजा की। करीब 21 भक्तों ने इसमें भाग लिया। कार्यक्रम का समापन प्रसाद वितरण और भक्ति-भोजनम् के साथ हुआ।

❖ **चेन्नई** : समारोह श्रीमती भवानी के आवास पर संध्याकाल में आयोजित हुआ। करीब 15 भक्तों ने पुष्प-समर्पण में भाग लिया। श्रीमती भवानी एवं श्रीमती नलिनी ने सात्विक तरीके से गुरु-अर्चना की। पूज्य स्वामीजी के संदेश को सुनने के बाद सभी ने प्रसाद एवं भक्ति-भोजनम् ग्रहण किया।

❖ **कोलकत्ता** : कोलकत्ता के भक्तों ने श्री सलिल भौमिक के आवास पर समारोह का आयोजन किया। पुष्पों से सज्जित पूज्य स्वामीजी के चित्र के समीप श्रीमती कला एवं श्री नरेन्द्रन के पुष्प-समर्पण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। भक्तों ने पूज्य स्वामीजी के 108 उपाधियों का उच्चारण किया। स्वामीजी के विडियों संदेश को दिखाया गया। इसके अतिरिक्त, यू-ट्यूब द्वारा विष्णु-सहस्त्रनाम-विश्व-यज्ञ-महोत्सव भी देखा गया। उसके बाद भक्तों ने प्रसाद एवं भक्ति-भोजनम ग्रहण किया।

❖ **पुणे** : जयंती दिवस श्रीमती गायत्री एवं श्री शरद निशिथ के आवास पर संध्या में एक साधारण समारोह में मनाई गई। करीब 15 भक्तों ने सत्संग में भाग लिया। पूज्य स्वामीजी के 108 नामों के समवेत स्वर में पारायण के साथ श्रीमती अनीता एवं श्री डी. के. श्रीवास्तव ने अर्चना की। इस पवित्र कार्यक्रम का समापन प्रसाद वितरण के साथ हुआ।

❑ **26 अप्रैल** को, त्रिचूर के परमेक्कावू मंदिर के अग्रशाला में इस वर्ष का MGV चैरिटेबल फाउंडेशन पुरस्कार न्यायधीश श्री पी. आर. रामण द्वारा एक पवित्र समारोह में पूज्य स्वामीजी को समर्पित किया गया। जिलाधीश श्रीमती एम एस जया, रेव०

डॉ फ्रांसिस अलापात और फॉउडेशन के सचिव श्री वासुदेवन ने समाज में धर्म स्थापना के लिए पूज्य स्वामीजी के अथक प्रयासों को उजागर किया। इस समारोह का उद्घाटन नेल्लापल्ली नारायणालयम के मठाधीपति स्वामी सनमायानन्दा ने किया। इसकी अध्यक्षता अधिवक्ता श्री थेराम्बील रामाकृष्णन, MLA, त्रिचूर ने की। समर्पण के पश्चात्, पूज्य स्वामीजी का एक कल्याणकारी संबोधन हुआ।

❑ **29 अप्रैल** : पूज्य स्वामीजी ने पाल घाट जिले के ओट्टापालम के कैलियाड चेरूमुलयन कावू में देवी भागवतम् नवाहा तथा नव निर्मित 'देवी ऑडिटोरियम' का उद्घाटन किया। स्वामीजी का स्वागत 'पूर्ण-कुंभम्' के साथ हुआ। अपने कल्याणकारी संबोधन में पूज्य स्वामीजी 'भक्ति येना महा निधि' (भक्ति एक निधि) विषय पर बोले। करीब 500 भक्तों ने इसमें भाग लिया।

❑ **01 मई** : पूज्य स्वामीजी ने त्रिचूर चे लक्कारा के निकट पंजल टोटाट्टील माना में 'महा किराटा रुद्र यज्ञम् 2014' का उद्घाटन किया। 'कर्म-ज्ञान-यज्ञनाडुल परस्परा पूरकम्'' (ज्ञान और कर्म की पूरकता) विषय पर अपने संबोधन में, स्वामीजी ने ज्ञान और कर्म के सूक्ष्म रूप का वर्णन महाभारतम् के वान-पर्व में उद्धृत किराटा के रूप में भगवान शिव और अर्जुन के बीच के प्रसिद्ध संवाद द्वारा किया। इस कार्यक्रम में करीब 150 लोगों ने भाग लिया, जिसमें समाज के संभ्रांत एवं प्रमुख साहित्यकार थे।

❑ **04 मई** : त्रिचूर में चेरपु के समीप नागरिक मित्रानंदपुरम् वामनमूर्त्ति मंदिर में, पूज्य स्वामीजी ने 'नवीकरण कलशम् संस्कार सम्मेलनम्' का उद्घाटन किया। 'क्षेत्र आराधना यूडे तत्त्व मूलयांगल' (मंदिर आराधना के मूल एवं मूल्य) विषय पर अपने तत्त्व प्रवचन में पूज्य स्वामीजी ने स्पष्ट किया कि ईश्वर की प्रतिमा को आराधना और श्रृंगार में संलग्न होकर, सच्ची पूजा का वास्तविक लाभ की संभूति स्वयं भक्त को होता है, प्रतिमा को नहीं।

❑ **15 मई** : चेम्बूत्रा कोडून्गाल्लूर कावू के भगवती क्षेत्रम में 'पूर्ण कुंभम' के साथ पूज्य स्वामीजी का स्वागत हुआ, जहाँ उन्होंने ''एवारूम अरीयन्डा संस्कार पैत्रिका प्रभावम्'' (सांस्कृतिक विरासत का गौरव प्रत्येक को जानना चाहिए)

विषय पर बोले। वहाँ उन्होंने 'सनातन धर्म संग्रहम' नामक पुस्तक का विमोचन किया जिसमें हमारे सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संक्षिप्त चित्रण है। करीब सौ पुस्तकें विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं बच्चों में निःशुल्क बाँटे गए। पुस्तक के संबंध में बोलते हुए, स्वामीजी ने हमारे कुछ प्राचीन वैज्ञानिक खोजों का वर्णन किया। करीब 1000 लोगों ने इसमें भाग लिया।

❑ **USA में स्वामी निर्विशेषानंद जी के कार्यक्रम :** 19 मई को नूतन स्वामीजी वाशिंगटन मेट्रोपोलिटन क्षेत्र (24 मई से 02 जून) और ऑरेन्ज कंट्री, कैलिफोर्निया (4 जून से 15 जून) में कार्यक्रम संचालन के लिये USA गये। वे जून के तीसरे हफ्ते में आश्रम वापस लौटेंगे। कार्यक्रम का विस्तृत विवरण मई अंक में प्रकाशित हुआ है।

पूज्य स्वामीजी का विडियो रेकॉर्डिंग

आश्रम में संपन्न 81 वीं जयन्ती समारोह

13 मई 2014,

इंटरनेट पर उपलब्ध है :- http://new.livestream.com/Ashram 1/events/2991562

आकार में आकार विहीनता का अनुभव

आपका मन सतत कार्यशील है, और आप भी हर समय अपने मन को पकड़ कर रखते हैं। क्या मन का एक आकार है? जब भी आप विचार करते हैं, क्या विचारों का रूप है ? जब मैं आपको एक मंत्र देता हूँ और कहता हूँ कि बिना आकार के ध्यान करें, आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं : ''स्वामीजी, क्या ध्यान के लिए एक आकार नहीं होना चाहिए?'' इसलिए, मैं पूछ रहा हूँ: ''क्या आपके पास आकार है? आप शरीर को देखते हैं; शरीर का आकार है। पर वह जो शरीर का अनुभव करता है और शरीर की आकृति बनाता है, क्या उसका एक आकार है?'' आपका मन विचार करता है - अनेकों विचार उत्पन्न करता है, और उन विचारों और गढ़न में आकार भी सम्मिलित हैं। वह मन जो अनेकों विचार उत्पन्न करता है, क्या उसका एक आकार है? नहीं! क्या आपकी बुद्धि का आकार है? तब उस आत्मा का क्या जो इन सब के तले है? उसका आकार कैसे हो सकता है!

- स्वामीजी